मुला : पेरियार ललई की मां

1.09.1911 - 7.02.1993

एकल नाटक

(कृपया इसका प्रिंट निकलवा कर पढ़ें, पढ़वाएं और मंचन करवाएं)

आभार : सुरेंद्र सिंह यादव (पेरियार ललई के भतीजे)
सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ (उ.प्र.), दिनांक : 01.09.2020

अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए. के. सिंह
मोबाइल : 7355175480

(प्रथम दृश्य)

(औरतों के पूड़ी बेलने वाला शोर का संगीत शुरु होता है...मुला सवर्णों के यहाँ सजातीय औरतो के साथ पूड़ी बेलने गई है। वहाँ उसको जाति सूचक उपहासी शब्द सवर्ण औरतों के द्वारा बोले जाते हैं। मुला बेईज्ज़ती महसूस करती है और सभी सहयोगी औरतों के साथ हाथ में पटा–बेलन लेकर चली आती है.....सेट पर .....हाथ में पटा–बेलन बड़बड़ाते और तमतमाते हुए प्रवेश..)

जात.....जात......जात.......

पता नई कबे जेहें जा जात.....

खात–पियत, चलत–फिरत, सोऊत जगत....जात .....जात......जात......

चौधरी....ओ चौधरी.....अब नई बोल निकर रओ. तब ता बड़ें ठसगरे बने फिरत हते..... जाओं पंडत जी की मोड़ी को ब्याव है, पुरी बिलवाय आओ जाये....सुनाई दे रई कि नई कछु, तुम कित्तोऊ कर लेओ इन लोगन के संगे भलाई के काम, लेकिन जब मौका मिलये जे काटइ खइयें। हम लोग गुस्सां के मारे आटा गुंदो भओ छोड़ के चली आईं।

यें......का कई....तो का हुय गओ....का हुयो गओ....हम तो पहले तें कहत चले आय रये, जे लोग अच्छे नइयें....हम हुअन गये ओर सबके संगे पुरी बिलवान लगे जाये....पंडतन की घरेतिने ठाड़ी हाय गई....ओर कहन लगी, अहिन्नी आय गयीं.... अहिन्नी आय गयीं....अब तुम्हई बताओ, हम हम काऊ को दओ खात का..? अरे हमाई हराम की खैबे की आदत नईयें...हम धरती की छाती फाऱ के खात हें। तोउ हम लोगन की जा हालत। अपनी भैंसिया को दूध पियत, काउ के घरे दोहान नई जात। तई के मारे देखो हमाये घरे काऊ कों मरो टूटो। सबकी छाती चौड़ी (Action)...सबको करहां सीधो (Action).....

चले आत पिछारी निकार के। चौधरी....नेक काम करवाये देओ....(रिरआय के पिछारी निकार के) नेक हमाऊ छपरा उठवाई देओ....आज पानी लगबे के डरो खेतन में....तुम कह दिया तो लरका काम करन चले जैहैं।

(साईक की तरफ) सुन रऐ के नई....

अबउं हमाओ ताव कम नई भओ है.....जो धरो तुम्हाओ पटा–बिलना......

अब जो तुम्हाउ कुल्हाड़ा कबहु–कबहुं हमई के उठाने परहे....

(गुस्से से साईक में पटा–बिलना रखकर, कुल्हाड़ा उठा लाती है। दर्शकों से....)

ओ कान खोल के सुन लेओ तुमहाऊ लोग....बस चूल्हे में बैठ के कर लेओ जात.... जात.....हुआं होटल में बैठ के ठाँस आत जाय कें.....तब नई आँखी खुलती, कि कौन जात वाले के हाथ को बनो भौ खाय लओ।

(साईक की तरफ देखकर कुल्हाड़ा पर हाथ फिराती है।)

चौधरी...कछऊ दिनन के लहें जू कुल्हाड़ा अब हमें दे देओ....हमाओ नाव मुला है...मुला. ...चौधरी साधु सिंह यादव की बिटैना.....

(फेड आऊट)

(द्वितीय दृश्य)

(चिड़ियों की चहचहाट और सूर्योदय के साथ सबेरा होता है...मुला दातून करती हुई इधर–उधर टहल रही है...तभी गाय–भैंस, बकरी की रंभाने की आवाज़ें आती हैं।)

आय रये...आय रयें....काऊ को हमाये बिना चैन नही परत....

(साईक के अंदर रखी हुई घास उठाकर जानवरों को खिलाने लगती है।)

जू सब तो हम अपने अम्मा दद्दा के हियां से करत चले आय रये। हमाये दद्दा चौधरी साधु सिंह यादव हियईं पास में रेलवे टेसन (स्टेशन) रुरा के ढ़िंगा, गांव मकरंदापुर, थाना शिवली, कानपुर में रहत हैं और हमाये मम्मा चौधरी नारायण सिंह यादव समाजसेवी किसान है। सबसे बड़ी बात जा, कि हमाये दद्दा और मम्मा कबहू दब के नई रये। काये सों कि जे लोग अंधविश्वास, पाखण्ड, रुढ़िवाद और ढकोसलन के चक्कर में कतई नई पड़े। बोई खून हमाई रगन में दौड़त....तई के मारे हमें बिना सिर–पैर की बातें बरदास्त नईं होती। जेई सब बातें सोंच के हमाये दद्दा ने मम्मा से कही, कि मुला के लहें बिना ठठकरम वालो घर ढूँढ़ों और हमाओ ब्याव चौधरी मुल्ला सिंह यादव के लरका चौधरी गज्जू सिंह यादव के संगे कर दओ गओ। तबसे हम हियईं कठारा, भारामऊ में रह रये हें....जोऊ रसुलाबाद कानपुर में है।

हूँ....(कुछ सोचती है।) तुम सबसे बातन के चक्कर में हम अपने लला के स्कूल वालो काम तो भुलई गये। चौधरी....ओ चौधरी.....तुमसे कही हती, सहायल चले जाओ. ...ओर लला के लहे सकूल (स्कूल) देख आओ। जल्दी जाओ...हिंयां से 10 मिल परत है....नई तो दुपाहरी होय जयहे। अब लला को पढ़ाने है तो इत्ती दूर आने–जाने तो परहे।

(तृतीय दृश्य)

(पड़ोस में सत्यनारायण की कथा हो रही है....वहीं से ललई की शिकायत आयी है।)

बताओ....अब किनके–किनके बवाल निपटायें....एक निपट नई पात, तब तक दूसरो तैयार....जैसो बाप तैसो बेटा...अब तुमहीं लोग बताओ...(दर्शकों से) परोसी के घर सत्यनारायण की कथा होय रई हती....पता नई कैसें हमाये ललई को पता लग गई....गये....कथा सुनन लगे, अब जा तो तुम लोगन को पता हेई कि बाप–बेटा बिना पूछताछ के तो रेह नई सकत। सो पंडत जी ने कई कि ढ़ाई रुपया देकें सत्यनारायण कराई, तो डूबी भई नाव ऊपर आय गई। ललई को न चेन परी...और पंडत जी के पास गये....उनके पास रखे लोटा में एक सिक्का डार दओ...और पंडतजी से कहीं कि

जू सिक्का ऊपर लाओ, तो हम तुम्हें जाने। पंडतजी चिल्लान लगे ...जू किनको लरका है, जाय पकल ले जाओ। सो पकर के लायी रहें हते। तो रास्ता में पता चलो कि बाज़ार में चौधरी कुल्हाड़ा धरें फुफकार रये हैं।

(गज्जू सिंह का जनेऊ तोड़ दिया गया है...बज़ार में लोगों की गरमा–गरमी की आवाज़ें आ रही है।)

जिनने हमाओ जनेऊ तोरो होय, बू भलमनसाहत से सामने आये जाये....नही तो दोय–चार खोपड़ी अलग डरी दिखाई दियें। भओ जो, कि जबसे चौधरी आर्यसमाजी भये, तबसे उन्हें जनेऊ पेंहदाये दओ गओ और जू बामनन को पचत नहिये, कि एक अहीर जनेऊ पहने, लेकिन चौधरी के तुर्रा के अगाऊ काउ की चलत नइये। आज बे खेत पे मूड़ पे लक्कड़ धरे चले जाय रहे हते। तो काउ ने पिछाऊं से चुप्पां उनको जनेऊ खींच के टोर दओ। काय सों अंगाऊ से तों टोरबे की दमई नईंये। फिर का हतो, तुमने सेर को जगाये दओ...चौधरी दहाड़े...जिनने हमाओ जनेऊ टोरो है, बाको जनेऊ हम भरे बाज़ार में टोरेयें। आज पता चलये कि कुल्हाड़ा गुरु का कर सकत हें। तुम लोग कुल्हाड़ा बाज से उरझे हो। बमनन ने भाँप लओ...आज अकल से काम ना लओ, तो गजब होय जेहें। उन्ने बा जनेऊ टोरन वाले लरका के पकर के मंगवाओ, और चौधरी के पायन से डार दओ....और कही, अब लरका है, गलती तो होयईं गई.. ..तुम्हाये ऊपर है, जो चाहो सो करो। फिर तो जानतई हो, चौधरी पसीज गये। लेकिन एक बात देखी एकऊ आर्यसमाजी चौधरी के संगे न ठाड़ो भओ। अबे समझबे में बोहत देर लगये।

(धीरे–धीरे लाईट डिम हो जाती है....क्योंकि सोने का समय हो रहा है।)

(चौथा दृश्य)

(रात हो चुकी है....सभी लोग सोने की कोशिश कर रहे हैं....झिंगुर की आवाज़ आ रही है....तभी सांकल की जोर–जोर खटकाने की आवाज़ आती है। देबुआ चिल्ला रहा है– चौधरी....चौधरी साब....ओ चौधरी साब.....)

(जम्हाई देते हुए मुला उठती है...)

तुम रुको चौधरी...हम देखत हैं.....कौन हे....कौन...देबुआ...इत्ते खने का करन आओ...? (अचानक मुला को महसूस होता है....हम तो हवा में बातें कर रहे हैं..)

उ......हूँ....कछू नइये...बिना मतलब कान बजन लगत। कल की घटना भुलायें नई भुलत। बताओ, जऊ कछु बात होत हे, कि जा एरिया में काऊ अछूत को नरा नई गिर सकत...यानी अछूत औरत के बच्चा नई होय सकत। अब तुमई लोग बताओ, जासे बड़ो कोई अन्याय होय सकत..? कल्लई की बात हे...हम सब सोनई जाय रये हते, कि पंडतजी को नोकर देबुआ सांकर भड़भड़ान लगो आय के। चौधरी साब.... चौधरी साब.... मदद करो....नई तो हमाई बहनिया मर जैहें। हम बाय कमरा में बंद करके बाहर से सांकल लगाय के आये हैं। हमने कई, काये...एसो का होय गाओ। बोलो हमायी बहन पेट से है....कल्लई हमाये घरे आयी हती....लेकिन अचानक बाको पेट पिरान लगो। बच्चा होन बालो हये। अगर बड़ी जात वाले जान गये तो गजब होय जैहें। चौधरी बोले– हमाये रहात भये इत्तो बड़ो अन्याय..? मुला, तुम 4–6 लठैत लेके देबुआ के संगे जाओ...बाकी बहनियसा की हालत देखो, अगर चलबे, फिरबे लायक होय, तो बाय हियां ले आओ। हियन देखे को आत है...जू कुल्हाड़ा धरो हैं। हमने खोपड़ी में बांधो मुरेठा और धरी कंधा पे लाठी।

(सिर पे मुरेठा बांध के कंधे पर लाठी रख लेती है।)

मूर्ति, कम्मो, सुमन, मालती, सावित्री,....सब जल्दी आओ...कांता, बल्लम, लाठी, कुल्हाड़ी, खुरपिया, डंडा जो कछु होय, हाथ में ले लेओ। ऐसी लठैती तो हम दद्दा के हियन से करत चले आये। और सबके संगे जाये के देबुआ के घरे कुन्डी खोल के घुस गये। देखो जाये कें, तो रोयबो आय गओ....चलबे फिरबे लायक नईं....हमने बाके सिर पे हाथ फेराओ....चिन्ता ना करये.....चौधरी फौज ले के आय रये होययें। आज जू अन्याय रहये या फिर अहीर। हमेसा से न्याय के संगे खड़े रये...आज फिर छाती अड़ाय दियें। बाहर खटर–पटर, सोर–सराबा सुन के कुठरिया से निकरे, तो देखें का...चौधरी के संगे पचासन लठेत और चौधरी दहाड़ रये। ओ समाज के ठेकेदार चौधरी को समझाय रये....चौधरी तुमऊ...चौधरी तुमऊ....नियम कायदा, चाल–चलन से कछु मतलब नई, सब भूल गये। समझ लेओ चौधरी...समझ लेओ। चौधरी ने देखो, जे तो चढ़तई चले आय रये, चौधरी ने लठैतन से कई, अरे उठाओ तो लाठीं....अबे हाल हम नियम कायदा समझाय दें। हम तुम्हाई पुरखन के मारे इज्ज़त कर रये और तुम जाये हमायी कमज़ोरी समझ रये। नियम कानून जब काम के रहे होययें, तब रहे होययें। अब हमाईं मोटी बुद्धि में तो जे नई घुसत। ऐसे नियम कानून से का फायदा, जो काऊ की मान सम्मान और जान की परवाह न करें। अब तुम लोग तो पढ़े–लिखे हो, जे सब ठठकरम सही है.? पंडतजी गरम माहौल को भाँप गये और नरम परकें अपने लठैतन से कई, पिछाऊं हटो....पिछाऊं हटो। अब जे चौधरी बे नाय रहे (नवजात की आवाज़) आवाज़ सुन के

हम बाहर से भीतर गये, देखें का, जच्चा–बच्चा सब सही सलामत। देबुआ थरीया बजाय–बजाय नचन लगो। (थाली की आवाज़) हमने बाहर आयके बताई, बहुत खुसी की बात हैं....जच्चा–बच्चा दोनऊ सही हैं। चलो बतासा बाँटों। पंडतजी बोले, जाओ लरकों, ढोलक–मंजीरा लेके आओ। भजन–किर्तन होन देओ। जब चौधरी को चाल–चलन से नई लेने–देने, तो हम काय कों बड़ी अम्मा बनी फिरें। सबकी राजी में हमाइऊ राजी। आओ चौधरी, तुमऊ लोग बैठो। आराम से बात कल लेओ करे, नेक कछु होय जाये, बमकन लगत। चलो आज से हमने कै दयी...जा नरा वाली प्रथा खतम....अब तो हंस देओ चौधरी....बजाओ रे बजाओ।

(ढोलक–मंजीरा की आवाज़ शुरु)

(तब तक याद आ जाती है...सबेरे ललई को स्कूल भेजना है...सोचने लगती है और सबेरे की तैयारी पर बुदबुदाने लगती है।)

अब कठारा के ढिंगा तो कोई सकूल (स्कूल) हे नईये....10 मिल दूर सहायल में है। अब चौधरी कों नेक जादा मेहनत परये। 10. मिल दूर छोड़न जाओ...लौट के आओ.. .खेती–बाड़ी करो, संझा के फिर लेन जाओ....अब लरका को कलक्टर बनाने है, तो मेहनत तो करनेइ परये।

(और सो जाती है।) फेड आऊट

(पाँचवा दृश्य)

(चिड़ियों की चहचहाट का सबेरा...साईक से निकल कर आती है...ललई के स्कूल जाने से उत्साहीत है।)

अपने लला को हमने कजरा, तेल सब कर दओ। रोटी बनाय के बांध दयी....कहूं लला भुखाय ना जाये। कजरा खूब मोटो–मोटो लगाय दओ, कि बड़ो–बड़ो दिखाई दे। कजरौटा हमने पहलेईं तैयार करके धर लौ हतो। घर को लाहा पेरवाये के मंगवाओ, सो बोई करुओ तेल लला की खोपड़ी में लगाओ....जासो खोपड़ी मजबूत रये ओर खूब काम करे। अच्छी सी मांग निकार दयी...तासो सुन्दर दिखाई दे।

(साईक में जाकर चिल्लाकर चौधरी को बोलती है।)

लला को आराम से ले जइयो...और स्कूल में सब सही–सही लिखवाय दियो। जनम 1 सितम्बर 1911....गाँव–कठारा....पोस्ट–भारामऊ...थाना रसुलाबाद...जिला कानपुर। उमर 5 साल ध्यान से लिखवाय दियो। न 15 साल लिखवाये के आय जाओ। काय सो अगर मुँह से ना बोले, तो पंडतजी 15 साल लिख लिये। अब बामें पंडतजी की कछु गलती नईये। कायस सों जे अहिरन के लरका, होत 5 साल के...ओ दिखाई देत 15 साल के। हम अपने ललई कों कटां दूध पिबात, ऐ देखो ऐंसे..(भैंस का थन पकड़ कर ललई के मुँह में) और ललई ऐसें पियत। (दूध की तरफ मुँह खोलकर)

(सोचने में स्कूल छूट्टी के घन्टे की आवाज़ सुनाई देती है।)

लगत अब लला की छुट्टी होय गई होयये....

(सांकल बजती है..) ..आय रये...आय रयें.....

(और साईक में घुस जाती है...बड़बड़ाती हुई निकल आती है।)

अब अहीर गड़रिया पढ़न जययें, तो काऊ को अच्छा तो लगये नईं। चौधरी लला को नाव, स्कूल में लिखान जाय रये हते। तो ठेकेदार लोगन के कलेजा पे साँप लोटन लगो, पढ़ाय–लिखाय के का करयो। अरे....पढ़ाई–लिखाई काऊ की बपौती है का..? कहत...भैसियां चरवाओ भैंसिया....स्कूल पहुँचे तो ललई को लरका परेशान करन लगे। हम अहीर गड़रिया को ढिंगा नई बैठन दिये। ललई को आय गओ ताव....गज्जू चौधरी को खून, कहाँ रुकन वालो...लरकन के उठाय–उठायस पटको। जा बात सुनके हमने ललई की बहोत डाँट लगाई...पढ़न गये कि लड़न गये थे। कछु दिक्कत हती तो पंडतजी से कहते। ललई बोलें, हमने कई हती...पंडतजी बोले अहीर–गड़रिया कह दयी तो का होय गयो। हमने समझाओ, लला जू सब तो होतई रयये, अगर तुम्हें पढ़ने–लिखने है तो गम खाने पड़ये। जब पढ़–लिख जइयो, तो जे सब लड़ाई बड़ी–बड़ी कोरट में लड़ियो। (खाँसी आ जाती है।)

फेड आऊट...

(छठा दृश्य)

(चारपाई हट जायेगी....कुर्सी–मेज लग जायेगी....साईक के अन्दर से गज्जू सिंह के खाँसने की आवाज़ आ रही है...मुला कॉस्ट्युम बदल कर नई लड़की के लूक,

(सलवार–कुर्ता, लम्बी चोटी फुँदनेवाली), में एक साईक से निकल कर, दूसरी साईक में पानी का गिलास लिये भागी चली जा रही है।)

आय रये बाबा...आय रये.....

(खाँसी शांत हो जाती है....साईक से फिर स्टेज पर...)

ललई के 14 वर्ष की उम्र में मुला अइया के 1925 में खतम होयबे के बाद, गज्जू बाबा की सेवा अब हमईं करत हें। काय सो ललई चच्चा तो 1926 में मिडल पास करबे के बाद बन विभाग में नोकरी करन मध्यप्रदेश चले गये। वर्ष 1931 में ललई सिंह का विवाह श्रीमती दुलारी देवी पुत्री चौधरी सरदार सिंह यादव के साथ हुआ। वर्ष 1939 में श्री ललई सिंह की पत्नी का देहान्त हो गया तथा 1946 में उनकी बेटी शकुन्तला का जो उस समय 11 वर्ष की थी। वे पूरी नौकरी में अन्याय के विरुद्ध खड़े रहें।

<u>सातवाँ दृश्य</u>

सुत्रधार : ललई सिंह, सेवानिवृत्ति के बाद अपने गाँव कठारा आ जाते हैं। इस समय पिताजी की उम्र भी 98 साल हो चुकी हैं। चूँकी आप एक न्याय प्रिय व्यक्ती थे। रिपब्लिकन पार्टी के प्रथम प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद वह प्रचार के लिये घर से अक्सर सुबह निकल जाते और शाम को वापस लौटते थे। खेती–बाड़ी और बाग की देखभाल के लिए पास के गाँव गड़रियन पूर्वा के दो गे भाईयों को रख लिया था, जोकि अछूत समाज से आते थे। उनका नाम था, नन्दू और रामदास।

एक दिन साहब, रास्ते से वापस लौट आये, और सीधे अपने बाग में चले गये। देखते हैं कि रामदास लेटकर सो गया और सारी बकरीयाँ दूसरे के खेत में चर रही हैं। उन्होंने चुपचाप साईकिल खड़ी की और अपनी सभी बकरियाँ हाँक कर, लगभग 15 किलोमीटर दूर रसुलाबाद के मवेशी घर में बंद कर आये। और वापस लौट कर गये, तब तक रामदास जा चुके थे। और परेशान थे कि आज दीवानजी बहुत डाटेंगे। लेकिन साहब ने अपनी जेब से पैसे निकाल

कर दिये और कहा कि जाओ, सभी बकरियाँ रसुलाबाद मवेशी घर में बंद हैं, जाकर छुड़ा लाईये। ये सब देखकर नौकर बहुत शर्मिन्दा हुआ।

आठवाँ दृश्य

सुत्रधार : इनके चचेरे भाई बहुत कर्मकाण्डी थे। वह मेवा मिष्ठान का हवन करते। ललई साब उन्हें कई प्रकार से समझाकर बताते कि यह सब अंधविश्वास है, किन्तु उनकी समझ में कुछ नहीं आता। एक दिन उनके भाई सियारी नदी में श्राद्ध के दिनों में अपने पुरखों व सूर्य को पानी पिला रहे थे।

(ललईभी नदी में खड़े होकर, नदी का पानी लेकर नदी में ही ***गिराने लगतें हैं तभी कुछ लोगों ने आकर पूछाः—***

ग्रामीण : ''दीवान जी यह क्या कर रहे हो? तुम और पानी? तुम तो इन सबके बड़े विरोधी हो। तुम किसे पानी दे रहे हो?

ललई : (तपाक से बोले) भाई अब आप लोग, इतनी दूर से अपने माता—पिता और सूर्य को पानी पिला रहे हैं, तो मैंने भी सोचा कि जब आपके माता—पिता और सूर्य यहाँ से पानी पी सकते हैं, तो मेरा खेत तो मुझसे बहुत निकट है, क्यों न यहीं से पानी पहुँचा दिया जाय।

भाई : मुझे सब समझ में आ गया भाई साब। अब आगे से मैं कोई पाखण्ड, कर्मकाण्ड नहीं करूंगा।

नौवा दृश्य

सुत्रधार : चौधरी गज्जू सिंह के परिवार और अछूतों के परिवारों में पुस्तैनी संबंध थे, परन्तु एक दूसरे के यहाँ खान–पान सम्भव नहीं हो सका था। उनके पुत्र ललई की मित्रता अछूतों से और मजबूत होती गई। यहां तक कि वह अछूतों के घर का भोजन भी बेहिचक ले लेते थे। अपने पिता की मृत्यु में न तो इन्होंने सिर मुड़ाया और न ही तेरहीं की। पत्नी तथा पुत्री की मृत्यु के पश्चात तो अधिकतर गांव वह आते ही न थे। वह चर्मकार, पासी आदि सभी अछूतों के घरों में ही रहते और भूख लगने पर उन्हीं के घर खाना खाते। एक दिन वह बाहर से आ रहे थे। गांव से पहले उनके चचरे भाई का मकान था। घर के पास ही उनके परिवार के बच्चे मक्का के भुट्टे भून रहे थे। उन्होंने रुक कर बच्चों से एक भुट्टा मांगा, भाई बोलो......

भाई : अरे इन्हें हमारा भुट्टा कैसे अच्छा लगेगा। भईया अब बात बहुत बढ़ गयी है, अब आपके हमारे घर आने जाने पर हमारे बच्चों के विवाह में समस्या खड़ी हो सकती है। अब आप अपना देखो और हम अपना।

ललई : अच्छा तो बात यहां तक बढ़ गयी है। तुम परेशान न हो, यदि मेरे आने से परिवार के बच्चों का भविष्य बिगड़ सकता है तो मेरा परिवार में आना ही धिक्कार है। मैं अब इस गांव को 24 घंटे के भीतर खाली कर दूंगा।

सुत्रधार : उन्होंने अगले ही दिन अपनी 59 बीघे जमीन, घर और एक एकड़ कटहल का बाग बेंच डाला। एक बाग अपने दूसरे चाचा के लड़के राम सेवक को देकर 1964 में अछूतों की मित्रता का दामन थामें घर से बेघर हो होकर, झींझक में आकर रहने लगे।

दसवाँ दृश्य

सुत्रधार : एक बार गाँव का व्यक्ती रमाशंकर यादव, साहेब के पास झींझक गया, जहाँ पर साहब रहने लगे थे और बोला कि दिवानजी, मेरी साईकिल अपने यहाँ रख लीजिए। मैं लोधेश्वर में दर्शन करने जा रहा हूँ। इस पर साहब ने क्रोधित होकर फटकार लगाई–सामने नहर बह रही है, उसमें जाकर अपनी साईकिल डाल दिजीए। आप इतनी मेहनत करके पैसा कमाते हैं, इसका उपयोग बच्चों की पढ़ाई–लिखाई में करो। आखिर कब छोड़ोगे तुम लोग अंधविश्वास? और साईकिल नही रखने दी, उनको वहाँ से भगा दिया।

इसी समय पाखण्डवाद के उन्मूलन के लिए बहुजन विचारक राम स्वरूप वर्मा को लेकर अर्जक संघ की स्थापना की। और उसी के बैनर तले चुनाव लड़ा। एक बार ललई सिंह रामस्वरुप वर्मा के चुनाव प्रचार में अपने समर्थकों के साथ ट्रैक्टर ट्रॉली में बैठकर जा रहे थे, तभी विरोधियों ने उनके ऊपर फायर कर दिया। उनके समर्थक घबरा गये और कहा–साहब आगे खतरा है, वापस लौट चलिये। साहब बोले– अरे ऐसी गोलीबारी मैंने बहुत देखी है। मैंने तोपों की गड़गड़ाहट में रोटियाँ सेकी हैं। अपना प्रिन्टिंग प्रेस लगाया, जिसका नाम 'सस्ता प्रेस' रखा'। इस प्रेस में उनके सामाजिक क्रान्ति से सम्बन्धित साहित्य की छपाई का कार्य शुरू हो गया। उन्होंने अंगुलीमाल, शम्बूकवध, सन्त माया बलिदान, एकलव्य व नागयज्ञ जैसे नाटकों का लेखन किया।

अछूतों के पशुवत जीवन को इन्होंने निकट से देखा था। अछूतों की दशा अत्यन्त दयनीय थी। बाबा साहब के भाषणों और अछूतों की चीत्कारों से वह कराह उठे थे।

उन्होंने कई धर्मों का अध्ययन किया, किन्तु उन्हें सबसे उपयुक्त बौद्ध धम्म लगा और उन्होंने बाबासाहेब डॉ.अम्बेडकर से प्रभावित होकर, उनके धम्मगुरु भंते चुडमणि से सारनाथ में बौद्धधम्म की दीक्षा ग्रहण कर ली। इसप्रकार डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर के गुरुभाई हो गये। हालाँकि ललई सिंह, बाबसाहेब के साथ ही नागपुर में दिक्षा लेना चाहते थे, लेकिन उनको पेचीस की बीमारी होने के कारण वे दिक्षा नहीं ले सकें।

बुद्धं शरणं गच्छामि,

धम्मं शरणं गच्छामि

संघं शरणं गच्छामि।

डॉ. भीमराव आम्बेडकर के परिनिर्वाण के बाद उनके द्वारा स्थापित रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इण्डिया को बढ़ाने मेंल ग गये। और यहीं से शुरू हो गया राजनीतिक करियर।

उसके बाद वर्ष 1967 में पेरियार ई.वी. रामासामी नायकर के सम्पर्क में आये। **पेरियार जी उस समय बहुजनों के क्रांतिकारी नेता बने हुए थे। उनसे मिलकर ललई सिंह को पता चल गया कि,** ऐसी विचारधारा वाले व्यक्ति ही बहुजन समाज को एक नई दिशा दे सकते हैं। पेरियार जी द्वारा लिखित पुस्तक 'सच्ची रामायण' को सरकार ने जब्ती का आदेश पारित कर दिया, जिसके विरूद्ध ललई सिंह ने माननीय न्यायालय में वाद किया, माननीय न्यायालय ने ललई सिंह को 300 रुपये मुआवजा सहित पुस्तक वापस दिये जाने के आदेश पारित किये। 24 दिसम्बर, 1973 को पेरियार ई व्ही रामास्वामी नायकर का निधन हो गया। मृत्यु के बाद वेलूर, दक्षिण भारत में विशाल जनसभा का आयोजन किया गया, जिसमें ललई सिंह को भी बुलाया गया।

(ललई सिंह उनको श्रद्धांजलि देने गये वहां भाषण देते हुए)

ललई : सबसे पहले आदरणीय पेरियार नायकर जी को मेरी ओर से श्रद्धांजलि।

बलिदान न सिंह का होते सुना,

बकरे बलि बेदी पर लाए गए,

विषधारी को दूध पिलाया गया,

कुंचुए कटिया में फंसाए गए,

न काटे टेढ़े पादप गए,

सीधों पर आरे चलाए गए।

बलवान का बाल न बांका भया,

बलहीन सदा तड़पाए गए।

साथियों! हमें रोटी, कपड़ा और मकान चाहिए। मुझे वहाँ पर बागी माना जाता है। हम आदरणीय नायकर साहब के कंधे से कंधा मिलाकर उनके साथ चलना चाहते थे, किन्तु थोड़े ही समय के लिए उनका साथ रहा। लेकिन जितना भी अनुभव मिला है, उस अनुभव के बल पर मैं उनके कारवाँ को रूकने नहीं दूँगा।

(भीड़ या विंग से आवाज़ आती है)–

आवाज : **पेरियार ललई सिंह, जिन्दाबाद, जिन्दाबाद!**

हमें हमारे पेरियार मिल गये।

ललई : तना बड़ा दर्जा देकर पेरियार बना दिया। साथियों मैंने दलित और पिछड़े भाइयों के उद्धार के लिए कई साहित्यों का प्रकाशन किया है, ये साहित्य आने वाले समय में दलित व पिछड़ा वर्ग को अपना इतिहास जानने में सहयोग प्रदान करेगा। मैं अपनी पेंशन का अधिकांश भाग साहित्य प्रकाशन में लगा देता हूँ। मेरी बेटी व पत्नी इलाज के अभाव में मृत्यु को प्राप्त हो गये। लेकिन यकीन मानिए, मैं अपने जीते–जी आप लोगों को अधिकार दिलाकर रहूँगा। मैं आपको बता दूँ कि दुनिया में दो ही धर्म हैं, तीसरा नहीं है।

एक नकद धर्म और दूसरा उधार धर्म।

ई हाथ से लेव और ई हाथ से देव, यह नकद धर्म है।

इस जनम में देव और अगले जनम में लेव, यह उधार धर्म है।

बौद्ध धम्म का मैंने अध्ययन किया है, जिसमें बुद्ध का बताया हुआ मार्ग ही विश्व का सच्चा धम्म है, जिसे हम नकद धर्म भी कह

सकते हैं। आदरणीय रामासामी पेरियार जी जहाँ भी जाते थे, वहाँ बुद्ध के सन्देश

'अत्त दीपों भव' अर्थात् अपना दीपक स्वयं बनो

को प्रचारित करते थे। आज मुझे यहाँ पर आप लोगों का प्यार पाकर अति प्रसन्नता हो रही है। धन्यवाद।

जय पेरियार, नमो बुद्धाय, जय भीम।

फेड आऊट.....

ग्याहरवाँ दृश्य

सुत्रधार : पेरियार ललई 82 वर्ष की उम्र में 20 किलो तक की पुस्तकों के बण्डल के लिए कभी कुली नहीं करते थे, बल्कि स्वयं ही लेकर चल देते थे। रिपब्लिकन पार्टी के कार्यकताओं में स्वार्थ की भावना प्रबल होने के कारण पार्टी से मोह भंग हो गया और 'बुद्धिस्ट सोसाइटी ऑफ इण्डिया' में उनकी रुचि बढ़ गयी। और उसका प्रसार करने लगे।

ललई : जय भीम, आइये। मैं आप लोगों से कहना चाहता हूँ कि संगठन कोई बुरा नहीं होता है, बुरे होते हैं उस संगठन के कार्यकर्ता। हम सब बाबा साहेब डॉ.अम्बेडकर के कर्जदार हैं, उन्होंने हमारे लिए क्या नहीं किया। अपने पूरे परिवार को हमारे लिए बलिदान कर दिया। क्या हम लोग उनके त्याग को कभी भूल सकते हैं? मैं तो बिल्कुल भी नहीं। आप लोगों के कारण वे दुखी रहते थे, वे कहते थे कि हमें हमारे पढ़े लिखे लोगों ने धोखा दिया है। उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं को जीवित रखना हमारा कर्तव्य है।

(कुर्सी से खड़े होकर इधर–उधर टहलते हुए)

ललई : मैंने ये कहने के लिए बुलाया हूँ। **आप पिछड़ा वर्ग से हैं....**आप मेरी बात ध्यान से सुने.....15–15, 20–20 दिनों तक कंधो पर कांवर लादे, ब्रज की लट्ठमार होली में, सम्मिलित होने वालों में, यही वर्ग सबसे आगे है....हैं न। मैं पूछता हूँ कि आखिर सवर्णों की इन सब में संख्या

अधिक क्यों नहीं है? मंदिरों में चढ़ावा चढ़ता है, वह किसके घर जाता है, और चढ़ाता कौन है, आप जैसे लोग। उस पैसे से मंदिर का पुजारी अपने परिवार के सदस्यों का भरण पोषण करता है, और उसी पैसे से पुजारी का बेटा बड़ा अधिकारी बनता है। अगर पिछड़ा वर्ग ऐसी व्यवस्था से ओतप्रोत है तो वह पिछड़ा वर्ग नहीं, बल्कि हिजड़ा वर्ग है।

(आरक्षण भोगियों की तरफ इशारा करते हुए)

और आप....आप लोग सहायताइष्ट, वजीफाइष्ट, रिजर्वेशनाइष्ट हैं। आप लोगों में से कोई बुद्धिष्ट और अम्बेडकराइष्ट नहीं है। सबसे पहले युवकों में विद्या अर्जन की अलख जगाइये। किसी भी नेता को चाहिए कि वह समाज का निःस्वार्थ भाव से कार्य करे। तथागत बुद्ध स्वयं कहते हैं कि यदि कोई बात तर्क की कसौटी पर खरी उतरे, तो ही उसे मानिए, अन्यथा अंधविश्वास में मत पड़िए। आप लोग इन पाखण्डों और अन्धविश्वासों से अपने लोगों को जगाइये। आप लोग अपने काम में लग जाइये।

सुत्रधार : **दिनांक 7 फरवरी, 1993 को रात्रि ठीक 11.10** पर सभी के दिलों में सत्य का दीप जलाने वाली जीवन ज्योति सदा–सदा के लिए बुझ गयी।

(बुद्ध धम्म का त्रिषरण संगीत बजता है...)

बुद्धं शरणं गच्छामि

धम्मं शरणं गच्छामि

संघं शरणं गच्छामि

——.समाप्त——

लेखक : ए.के.सिंह

प्रॉपर्टी

पटा, बेलन, कुल्हाड़ी, लाठी, दातून, 1 गिलास, घास....

कॉस्ट्यूम

धोती, ब्लाउज,

देहाती सलवार, कुर्ता, फुंदना लम्बी चोटी,

ऑन स्टेज

तीन ब्लॉक, 1 बेंच, कुर्सी, मेज

2 x 3 **पेरियार ललई** फोटो

चारपाई, तकिया, चादर

सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ (उ.प्र.), दिनांक : 01.09.2020
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए. के. सिंह
मोबाइल : 7355175480